बिहार में जनता की जीत को छीन लिया गया

जितेन्द्र उपाध्याय

बिहार विधानसभा चुनाव का परिणाम भले ही एनडीए के पक्ष में रहा पर नतीजों को लेकर सवाल उठते रहेंगे। चुनावी अभियान में महागठबंधन का मुख्यमंत्री चेहरा रहे तेजस्वी यादव की सभाओं में उमड़ रही भीड़ व मतदान के बाद एग्जिट पोल ने यह तस्वीर बना दी थी कि एनडीए के हाथ से यह चुनाव निकल चुका है। यहीं तक नहीं मतगणना शुरू होने के 2 घंटे बाद तक की तस्वीर महागठबंधन के इर्द-गिर्द ही घूमती हुई नजर आई।

लेकिन ज्यों दोपहरी चढ़ने के साथ ही शाम ढलने लगी अचानक बाजी एनडीए की ओर पलट गई। जिसका अंत एनडीए की जीत के रुप में सामने आया। इस पूरे क्रम में खास बात यह रही कि वे सारे नतीजे देर शाम के बाद आने शुरू हुए जिन पर हार जीत का अंतर 1000 के अंकों से कम था। इसको लेकर महागठबंधन ने गंभीर आरोप लगाए हैं। नैतिकता व नीतिगत आधार पर एनडीए तथा सरकारी मशीनरी को संतोषजनक जवाब देना होगा। जिससे कि चुनाव परिणाम को लेकर लगाए जा रहे अटकलों पर विराम लग सके।

एक फोन के बाद बदले हालात

मतगणना में धांधली की शिकायत महागठबंधन ने चुनाव आयोग से भी की है। यह आरोप ऐसे ही नहीं शुरू हो रहे हैं , कहा जा रहा है कि मतगणना के दिन दोपहर में भाजपा हाईकमान की टीम के प्रधानमंत्री के बाद दूसरा चेहरा कहे जाने वाले एक नेता ने जदयू प्रमुख नीतीश कुमार को फोन किया। इसके बाद से ही लगातार मतगणना का रुझान अचानक एनडीए के पक्ष में बढ़ता चला गया। कहा जा रहा है कि 1000 से कम मतों के सारे नतीजे रात में ही आने शुरू हुए। सवाल यह उठता है कि जब दोपहर बाद से राज्य भर से परिणाम आना शुरू हुआ तो नतीजा कम अंतर से हो या अधिक के अंतर से रिजल्ट आना चाहिए था। लेकिन 1000 से कम अंतर के दर्जनभर से अधिक सीटों के परिणाम रात में क्यों घोषित हुए।

मुख्यमंत्री के गृह जिले नालंदा की हिलसा सीट पर आरजेडी उम्मीदवार मुनि उर्फ शक्ति सिंह यादव को 12 मतों के अंतर से हार का सामना करना पड़ा। यहां जदयू ने जीत दर्ज की है। जबकि आरजेडी उम्मीदवार शक्ति सिंह यादव का आरोप है कि 145 बैलट पेपर के वोटों को जबरन रद्द कर दिया गया। शेखपुरा के बरबीघा सीट पर कांग्रेस के गजानंद शाही को 113 मतों के अंतर से हार का सामना करना पड़ा। उधर बेगूसराय जिले के बछवाड़ा सीट पर सीपीआई का प्रत्याशी मात्र 737 मतों से पराजित हुआ। यहां बीजेपी के सुरेंद्र मेहता जीत हासिल किए हैं।

गोपालगंज जिले के भोरे सुरक्षित सीट पर 450 अंकों के अंतर से सीपीआईएमएल के जितेंद्र पासवान को हार का सामना करना पड़ा। यहां भी जदयू के सुनील कुमार विजयी घोषित किए गए हैं। इसी क्रम में खगड़िया जिले के परवाता सीट पर जदयू के डॉक्टर संजीव कुमार मात्र 951 वोटों के अंतर से जीत हासिल किए। यहां आरजेडी के दिगंबर तिवारी को पराजय मिली है। ऐसे ही नतीजे अन्य आधा दर्जन से अधिक सीटों की भी है। खास बात यह है कि अंतर वाले ये सारे परिणाम एनडीए के पक्ष में ही आए हैं। अब इसे संयोग कहेंगे या सरकारी मशीनरी का दुरुपयोग। नतीजों को लेकर सवाल तो उठेंगे ही।

तो क्या है इस चुनाव का विश्लेषण

बिहार विधान सभा चुनाव संपन्न हो चुका है। सभी 243 सीटों का परिणाम घोषित हो गया है। एनडीए को 125 और महागठबंधन को 110 सीटें मिली हैं। यहां तेजस्वी यादव की आरजेडी 75 सीटों के साथ बड़ी पार्टी बन गई है। वहीं भाजपा 74 सीटों के साथ दूसरी बड़ी पार्टी बनी है। एनडीए में शामिल भाजपा को 74, जेडीयू को 43, वीआईपी को चार और एचएएम को चार सीट पर जीत मिली है। महागठबंधन में शामिल आरजेडी को 75, कांग्रेस को 19, सीपएलएमएल को 12, सीपीआई एवं सीपीएम को दो-दो सीटों पर जीत मिली है। इस चुनाव में एआईएमआइएम ने 5 तथा लोजपा व बसपा को एक-एक सीट पर संतोष करना पड़ा है। एक सीट निर्दल उम्मीदवार के खाते में गई है। इस चुनाव में एनडीए को भले ही पूर्ण बहुमत मिला है, लेकिन 15 साल तक मुख्यमंत्री रहे नीतीश कुमार की जमीन खिसकते हुए दिख रही है। उनकी जगह राजद के तेजस्वी पिछड़े वर्ग में मजबूत नेता बन कर उभरे हैं।

नीतीश के निजी वोटर हुए उनसे दूर

इस चुनाव में नीतीश के निजी वोटर उनसे दूर हुए हैं। तेजस्वी राजनीति के शैशवाकाल में होने के बाद भी राजनीति के धुरंधर खिलाड़ी

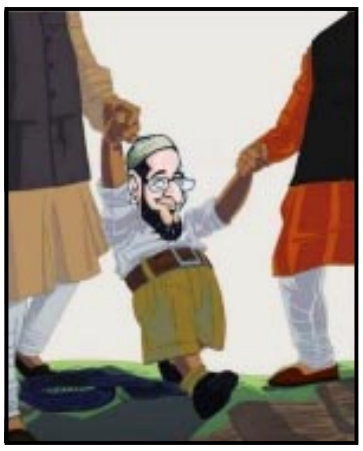

नीतीश कुमार से आगे निकल गए। सभी मानते हैं कि नीतीश कुमार तब तक पिछड़े वर्ग के दिलों में बसते थे, जब तक वह भाजपा से अलग थे। भाजपा के साथ होने के बाद पिछड़े वर्ग के उनके निजी वोटर उनसे कट कर राजद से जुड़ गए। नीतीश को यह बात समझ में नहीं आई कि उच्च वर्ग के वोटर भाजपा के हो चुके हैं, जबकि उनकी अच्छी पैठ पिछड़े वर्ग में थी, उन्हें सहेज कर रखने में वह विफल हो गए। भाजपा ने अंदरखाने से दांव चलकर उनकी राजनीति पर प्रहार किया है। नीतीश कुमार गठबंधन के समझौते के मुताबिक भले ही मुख्यमंत्री बन रहे हैं, लेकिन उनका मन अंदर से इस बात के लिए संतुष्ट नहीं होगा। इस बात को वह नहीं भूल पाएंगे कि वह खुद के दम पर नहीं, दूसरे के दम पर बिहार के मुख्यमंत्री हैं।

भाजपा के दबाव में रहेंगे नीतीश

मुख्यमंत्री बनने के बाद नीतीश कुमार को भाजपा के दबाव में काम करना होगा। ऐसे में वह पूरी तरह भाजपा का हो जाएंगे। नीतीश कुमार को यदि अपनी राजनीतिक जमीन बचाए रखनी है तो NDA की जीत के बाद भी उन्हें भाजपा से अलग होना चाहिए। कुर्सी के मोह में यदि वह ऐसा नहीं करते हैं तो पिछड़े वर्ग से उनका नाता पूरी तरह टूट जाएगा। इसलिए कि उच्च वर्ग उन्हें अपना नेता कभी स्वीकार नहीं करेगा।

चुनाव का रिजल्ट घोषित होने के बाद नीतीश कुमार को भी इस बात का एहसास हो रहा होगा कि उन्होंने क्या खोया..क्या पाया। बिहार में इस बात को दरकिनार नहीं किया जा सकता कि नीतीश कुमार ने देश में बिहार की एक अलग छवि पेश की है। विकास भी किया है, लेकिन अब की राजनीति में विकास के साथ-साथ जातिगत गणित भी ज?यादा मायने रखती है। वोटरों के दिमाग में विकास की बातें बाद में आती हैं, पहले यह देखा जाता है कि कौन सा दल, किस जाति का पक्षधर है। इसी आधार पर वोट की गणित सेट होती है। बिहार के चुनाव में ऐसा ही हुआ है।

कांग्रेस ने डुबो दी तेजस्वी की नैया

बिहार में यदि राजद के तेजस्वी मुख्यमंत्री नहीं बने तो इसकी देन कांग्रेस है। यूपी में ऐसी गलती एक बार सपा के अखिलेश यादव भी कर चुके हैं। वही गलती तेजस्वी ने भी बिहार में की। कांग्रेस को 70 सीटें देकर तेजस्वी, अपने पैरों पर खुद ही कुल्लाड़ी मार लिए। उन्हें कांग्रेस को 70 सीटें देने के बजाय, उनकी हैसियत के मुताबिक ही सीटें देनी चाहिए थी। कांग्रेस को इतनी सीटें देने से पहले इस बात का आकलन करना चाहिए था कि बिहार में कांग्रेस की राजनीतिक जमीन कितनी मजबूत है। 70 सीटें देने के बाद भी कांग्रेस मात्र 19 सीटों पर ही सिमट गई। तेजस्वी के हाथ से मुख्यमंत्री की कुर्सी जाने का सबसे बड़ा कारण यही रहा। यूपी में 2017 के विधान सभा चुनाव में सपा के अखिलेश यादव ने भी इसी तरह का काम किया था। 403 सीटों में से कांग्रेस को 105 सीटें दे दी थी। खुद 298 पर चुनाव लड़ा था। उस वक्त भी कांग्रेस मात्र 7 सीटों पर सिमट गई। खमियाजा सपा का भुगतना पड़ा।

अभी नहीं, आगे बिगड़ सकते हैं भाजपा के बोल

अभी के समय में बिहार में भले ही नीतीश कुमार मुख्यमंत्री बन रहे हैं, लेकिन आगे चलकर नीतीश के प्रति भाजपा के बोल बिगड़ भी सकते हैं। भाजपा के कई नेताओं को इस बात का मलाल है कि उनकी सीटें ज्यादा होने के बाद भी कम सीटें पाने वाले नीतीश कुमार मुख्यमंत्री बन रहे हैं। अभी वे कुछ नहीं बोल रहे हैं लेकिन आगे की राजनीति में संभव है अंदरखाने से भाजपा अपने कुछ बड़बोले नेताओं को आगे कर दे, और वे नीतीश कुमार पर प्रहार शुरू कर दे। ऐसा पहले हुआ भी है। उसी कारण नीतीश कुमार भाजपा से अलग भी हुए थे। उसके बाद वह राजद के साथ मिलकर चुनाव लड़े थे।

राजद से भी जब उनका उचित सामंजस्य नहीं बैठा तो वह दोबारा भाजपा की ओर झुके। तब के हालात ऐसे थे कि दोनों को एक-दूसरे की जरूरत थी। दोनों तरफ से समझौता पहले इस बात पर हुआ कि अब कोई भी भाजपा नेता गलत बयानबाजी नहीं करेगा। इसमें प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का हस्तक्षेत ज्यादा काम किया। उसके बाद से नीतीश और भाजपा का सुर-ताल एक रहा, लेकिन तब सीटों को लेकर बात कुछ और थी, अब बात कुछ और है। तब नीतीश कुमार बड़े दल के नेता थे, अब भाजपा उनसे ज्यादा बड़ी है। ऐसी स्थिति में एक परिवार भी नहीं चल पा रहा, वह तो सरकार है। आगे मालिक जय श्रीराम।

देश में नकली शराब का सबसे बड़ा सप्लायर बना हरियाणा, कौन है मास्टरमाइंड ?

जांच के लिए अब तक दो एसआईटी बन चुकी, नतीजा अब तक जीरो

मजदूर मोर्चा ब्यूरो

फरीदाबाद: हरियाणा देश में जहरीली, नकली शराब और अवैध शराब का सबसे बड़ा हब बन गया है। अब तक दो एसआईटी शराब घोटाले और जहरीली शराब से हुई मौतों को लेकर राज्य सरकार बना चुकी है लेकिन इस अवैध धंधे पर लगाम नहीं लगा सकी है। राज्य के औद्योगिक शहरों सोनीपत, पानीपत, फरीदाबाद, गुड़गांव, जगाधरी, यमुनानगर, रोहतक, भिवानी, जीन्द में सबसे ज्यादा अवैध शराब का धंधा फलफूल रहा है। बुधवार तक 53 लोगों की मौत हो चुकी थी। इसमें से 42 सोनीपत जिले में, 8 पानीपत जिले में और तीन फरीदाबाद जिले में मौतें हुई हैं। लेकिन हरियाणा ही नहीं देश भी इन मौतों पर मौन है। सोनीपत, पानीपत और फरीदाबाद में जहरीली शराब पीकर मरने वाले ज्यादातर गरीब मजदूर और निम्न आय वर्ग के लोग हैं। हरियाणा सरकार लव जिहाद जैसे फर्जी मुद्दों को लेकर ज्यादा चिन्तित है लेकिन अवैध शराब से हो रही इन मौतों पर उसकी कोई तवज्जो नहीं है। नकली और जहरीली शराब के धंधे की जांच के लिए अब तक दो एसआईटी बन चुकी है लेकिन हर बार मास्टरमाइंड बदल जाता है। राजनीतिक संरक्षण की तरफ पुलिस का ध्यान नहीं है।

कहां-कहां बन रही है शराब

हरियाणा के लगभग हर शहर और खासकर यमुना नदी के किनारे बसे गांवों में देसी और मिलावटी अंग्रेजी शराब बनाने का कुटीर उद्योग खुला हुआ है। पुलिस ने सोनीपत के नैना गांव में बॉटलिंग प्लान्ट पकड़ा, जहां देसी शराब बनाई जा रही थी। दरअसल, सोनीपत का खरखोदा कस्बा अवैध शराब के कारोबार का सबसे बड़ा केंद्र है। लॉकडाउन के दौरान यहां से देश के करीब 10 राज्यों को नकली और अवैध शराब की सप्लाई हुई। जून में अंबाला और कुरुक्षेत्र में पुलिस ने ट्रक और अन्य वाहनों से ले जाई जा रही शराब बरामद की। इन्हें एनवी डिस्टलरी से ले जाया जा रहा था। शराब की इन खेपों को भूपेन्द्र सिंह - जितेन्द्र सिंह नियंत्रित कर्टल ले जा रहा था। पुलिस ने शराब स्मगलिंग के आरोप में भूपेन्द्र सिंह को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस के मुताबिक भूपेन्द्र सिंह ने बताया कि उसे यह शराब एनवी डिस्टलरी से मिली थी। एनवी डिस्टलरी के मालिक एन.के. जैन को दिल्ली से गिरफ्तार कर लिया। जैन को एक साल पहले भी अवैध शराब के कारोबार के आरोप में पानीपत के पास समालखा पुलिस ने गिरफ्तार किया था। पानीपत के एक पुलिस अफसर ने अक्टूबर में हिन्दुस्तान टाइम्स के रिपोर्टर को बताया था कि एन.के. जैन ने उस समय स्वीकार किया था कि उसने कई राज्यों को शराब सप्लाई की थी। इसके बाद पुलिस जांच में पता चला कि जैन के साथ

कुछ और लोग भी जुड़े हैं, जिस नकली शराब की स्मगलिंग कर रहे हैं। पानीपत पुलिस ने भूपेन्द्र सिंह और एन.के. जैन का आमना-सामना कराया लेकिन जैन ने इसे स्वीकार नहीं किया कि उसने यह काम भूपेन्द्र सिंह के कर्टल के जरिए किया है। भूपेन्द्र के खिलाफ हरियाणा के अलावा बिहार, झारखंड, यूपी, एमपी में शराब स्मगलिंग के मामले दर्ज हैं।

हरियाणा से ले जाई जा रही शराब जब कई राज्यों में भी बरामद हुई और उस पर शोर मचा तो हरियाणा सरकार ने एसआईटी बना दी। एसआईटी ने अपनी जांच रिपोर्ट अगस्त में हरियाणा सरकार को सौंप दिया। जांच रिपोर्ट के ब्यौरे से राज्य के गृह मंत्री अनिल विज ने सहमति जताई लेकिन अभी तक उस रिपोर्ट को सार्वजनिक नहीं किया गया है। सूत्रों के मुताबिक इस जांच रिपोर्ट में बताया गया है कि 1 अप्रैल 2019 से लेकर 10 मई 2020 तक हरियाणा में ही अवैध और नकली शराब की बड़े पैमाने पर बरामदगी हुई। इनकी स्मगलिंग करने वाले लोग एनवी डिस्टलरीज से जुड़े हुए थे। इस संबंध में अंबाला के मुलाना पुलिस स्टेशन में एफआईआर नंबर 143 दर्ज है, जिसमें 1800 बोतल अवैध शराब बरामद होने की बात कही गई है। इसी तरह कुरुक्षेत्र के सदर पुलिस स्टेशन में एफआईआर नंबर 222 में 14,100 बोतल अवैध शराब बरामदगी दर्ज है। ये शराब करनाल जिले के चन्दरो गांव में स्थित आरएस डिस्टलरी में तैयार की गई थी। कुरुक्षेत्र के ही सदर पुलिस स्टेशन में दर्ज एफआईआर नंबर 302 में 10.104 बोतल अवैध शराब बरामद होने की बात स्वीकार की गई है।

कौन चला रहा है इस धंधे को

अवैध शराब स्कैम में पिछले दिनों हरियाणा पुलिस ने सोनीपत के भूपेन्द्र और जितेन्द्र नामक लोगों को इस धंधे का सरगना बताकर गिरफ्तार किया गया था। पुलिस सूत्रों ने यह भी बताया था कि दोनों एनवी डिस्टलरी के मालिक एन.के. जैन के लिए काम करते थे। लेकिन अभी जब सोनीपत, पानीपत में जहरीली शराब का मामला सामने आया तो धंधे के मास्टरमाइंड बदल गए। पानीपत पुलिस ने अंबाला से मनीष कश्यप और विजय कुमार को गिरफ्तार किया है। पुलिस का कहना है कि इन दोनों ने मुम्बई की कंपनी से इथेनॉल केमिकल बरामद किया था, जिसे सोनीपत में शराब बनाने वालों को सप्लाई किया गया था। इसी इथेनॉल से वह जहरीली शराब भी बनी थी। पुलिस ने सोनीपत से दो अवैध शराब फैक्ट्रियों से 3400 लीटर इथेनॉल बरामद किया था, जिन्हें 17 ड्रमों में छिपाकर रखा गया था। हालांकि पानीपत पुलिस ने जहरीली शराब का मुख्य सप्लायर पहले नरेश और उसके पार्टनर कुलदीप को बताया था। नरेश के साथ इस मामले में एक बिचौलिये मोहित को भी गिरफ्तार किया गया है। इस तरह अब तक गिरफ्तार पांच लोगों को जहरीली शराब कांड का मुख्य आरोपी बताया गया है। लेकिन ये पांचों इस धंधे की छोटी मछलियां हैं। श्रीकांत जाधव के नेतृत्व में बनी दूसरी एसआईटी ने इन पांचों आरोपियों से गुरुवार को पानीपत और सोनीपत में पूछताछ की है लेकिन मामले में कुछ खास हासिल नहीं हुआ है। इस गैंग के सरगनाओं के असली चेहरे सामने आना अभी बाकी हैं।

इस तथ्य को गौर से पढ़िए -

हिसार पुलिस ने 17 अप्रैल 2020 को हिसार के रसूखदार भाजपा नेता और पार्षद महेन्द्र जुनेजा के भाई मुनीष और उसके दो साथियों मनोहर लाल व उसके बेटे हिमांशु को गिरफ्तार किया। पुलिस ने भाजपा नेता के भाई और मनोहर लाल के पास से 2800 पव्वे अवैध देसी शराब के और 12 बोतल अवैध अंग्रेजी शराब की बरामद की। हालांकि उस समय भाजपा नेता महेन्द्र जुनेजा ने इस साजिश बताया था। उनका कहना था कि चूंकि वह राजनीति में हैं, इसलिए उन्हें फंसाने और पार्टी को बदनाम करने के लिए यह साजिश रची गई है। पुलिस ने इस मामले की आगे जांच बंद कर दी। उसने यह पता लगाने की कोशिश ही नहीं की आखिर इन तक ये शराब किन लोगों ने पहुंचाई। उस समय कोरोना की वजह से हरियाणा में सभी शराब के ठेके बंद थे। इसके बावजूद धड़ल्ले से अंग्रेजी और देसी शराब की सप्लाई शहर-शहर हो रही थी। भाजपा नेता के भाई के साथ जिस मनोहर लाल को पुलिस ने गिरफ्तार किया था, वह हिसार शहर में अवैध शराब सप्लायर का चर्चित नाम है। उस पर कई मुकदमे भी दर्ज हैं। लेकिन हरियाणा में शराब ठेकों की बंदी के दौरान शराब की सप्लाई जारी रही, इसके पीछे राजनीतिक लोगों के संरक्षण से इन्कार नहीं किया जा सकता है। चूंकि देसी शराब इथेनॉल केमिकल से बनाई जाती है, इसलिए देसी शराब तैयार करने वालों ने ज्यादा पैसे कमाने के चक्कर में इस धंधे को कुटीर उद्योग में उसी दौरान बदल डाला था। उसी समय से शिकार का खून मुंह में लगा था और इथेनॉल से शराब बनाकर धड़ल्ले से सप्लाई की जा रही थी। लेकिन यह धंधा जो कर्टल चला रहा है, वह अभी भी पुलिस के रडार पर नहीं आया है।

कब हो जाती है जहरीली शराब

देसी शराब इथेनॉल और मेथनॉल नामक केमिकल से बनाई जाती है। इसके अलावा भी और कई तरह से भी देसी शराब बनती है। लेकिन इन दोनों केमिकल से बनाना ज्यादा आसान है तो शराब के धंधेबाज इन्हीं दोनों केमिकल से देसी शराब तैयार करते हैं। ये दोनों केमिकल सिर्फ फैक्ट्री मालिकों को मिलते हैं। ज्यादातर अपना स्टॉक मुम्बई से उठाते हैं और वहां से फिर इसे बाकी देश में भेजा जाता है। हरियाणा में ये दोनों केमिकल इंडस्ट्रियल इस्तेमाल के नाम पर लाये जाते हैं और इन्हें देसी शराब बनाने वालों को महंगे दामों पर बेच दिया जाता है।

एक्सपर्ट कहते हैं कि जब कच्ची शराब का लाहन तैयार किया जाता है और इथेनॉल या मिथेनॉल को इसमें निश्चित डिग्री पर रखकर पकाया जाता है। अगर उस प्रक्रिया में शराब ज्यादा पक गई तो वह जहर बन जाती है। फोरेंसिक साइंस एक्सपर्ट नागेन्द्र सिंह के अनुसार गन्ने के रस, ग्लूकोज, शीरा, आलू, चावल, जौ जैसे स्टार्चयुक्त पदार्थों के फर्मनटेशन से इस शराब को बनाते हैं। नशीला बनाने के लिए इथेनॉल या मेथनॉल मिलाते हैं। सामान्य अल्कोहल लीवर के जरिए एल्डिहाइड में बदलती है, ये मिथाइल अल्कोहल फॉर्मेल्डाइड नामक जहर बन जाती है। आखों व दिमाग पर असर होता है। अंधापन जैसे लक्षण उभरने लगते हैं।

इसके अलावा अंग्रेजी शराब भी बड़े पैमाने पर स्प्रिट के जरिए नकली बनाई जाती है। भारी मात्रा में स्प्रिट लेकर उसमें केमिकल डालकर अंग्रेजी शराब तैयार कर दी जाती है। इसका धंधा करने वाले दावा करते हैं कि वे दो-तीन सौ रुपये के खर्च पर दो हजार बोतल तक अंग्रेजी शराब बनाते हैं और फिर उसे पुरानी बोतलों में भरकर ठेकों के जरिये बाजार में बेच दिया जाता है। शराब के ठेके चलाने वाले इसे ज्यादा मुनाफा कमाने के चक्कर में असली अंग्रेजी शराब के साथ इसे भी बेच देते हैं। कबाड़ी इसीलिए शराब की खाली बोतलें ज्यादा खरीदते हैं, क्योंकि शराब माफिया को पुरानी शराब की बोतलों की जरूरत पड़ती है। इस तरह मार्केट में इन्हीं पुरानी बोतलों के जरिए मिलावटी अंग्रेजी शराब पहुंच जाती है।